P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

विवेकानन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बी0आर0डी0पी0जी0 कॉलेज,
देवरिया (उ0प्र0) भारत

ए0के0 नौटियाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बिड़ला परिसर शिक्षा विभाग,
हे0न0ब0ग0 विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय)
श्रीनगर (गढ़वाल)
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारतीय शिक्षा के इतिहास में शिक्षा की गुणवत्ता सदैव ही नीतियों एवं समितियों के लिए चिंता का मुद्दा रही है। अध्यापको की कार्य संतुष्टि से विद्यालयी शैक्षिक वातावरण की गुणवत्ता प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। अध्यापन के कार्यक्षेत्र में कार्य संतुष्टि अध्यापक के लिए एक प्रेरणा का कार्य करती है। अतः अध्यापन कार्य में कार्य संतुष्टि का होना जरुरी है। यह कर्मचारी द्वारा अपने कार्य प्रदर्शन के दौरान कई विशिष्ट पसंद और नापसंदों के संतुलन की परिणति होती है जो उस कर्मचारी की अभिवृत्ति का निर्माण करती है। यह अभिवृत्ति उसके कार्य एवं क्रियाकलापों से सम्बन्धित होती है जैसे–मजदूरी, कार्य, सुरक्षा कार्य, अन्य लाभों में सहभागिता के अवसर, कार्य का स्वरूप, प्रोन्नति के अवसर इत्यादि।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया है, क्योकि शिक्षण व्यवसाय की गुणवत्ता एवं सफलता शिक्षक की कार्य संतुष्टि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको के बीच कार्य संतुष्टि के अध्ययन के लिए डा0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया है। इस अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा देवरिया जनपद के 100 टी0ई0टी0 उत्तीर्ण व 100 गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है। इस शोध के परिणाम में यह पाया गया कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों की कार्य संतुष्टि गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको की तुलना में अधिक है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक स्तर, टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापक, गैर–टी0ई0टी0 अध्यापक, कार्य सन्तुटि, देवरिया जनपद।

प्रस्तावना

शिक्षा की तुलना एक औषधि से की जा सकती है जो व्यक्ति के चिंतन को नई दिशा देती है, चरित्र को श्रेष्ठ बनती है तथा व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। कार्य संतुष्टि औद्योगिक मनोविज्ञान का एक प्रचलित प्रत्यय है। इसका प्रयोग सबसे पहले 1935 में होपॉक ने किया। कार्य संतुष्टि का अर्थ व्यावसायिक कार्य से प्राप्त होने वाली संतुष्टि से है, जो व्यक्ति को उसकी प्रकृति अथवा मौलिक अवस्थाओं से मिलती है। कार्य संतुष्टि के कारण व्यक्ति अपने कार्य में निरन्तर प्रगति (वृद्धि) करता है और बिना किसी अरूचि एवं मानसिक दवाब के अपने कार्य को पूरा करता है। ब्लूम तथा नेलर के अनुसार ''कार्य संतुष्टि कर्मचारी के विभिन्न दृष्टिकोणों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य के प्रति, कार्य से सम्बन्धित कारकों के प्रति और अपने सामान्य जीवन के प्रति अपनाता है। संतुष्टि का सम्बन्ध उन अच्छी बातों से है जिन्हें वह अपने कार्य में समझता है और जीवन के प्रति उस दृष्टिकोण से है जिसे वह अपनाता है। संक्षेप में कार्य संतुष्टि एक प्रकार का समन्वय या मैचिंग है, जो कर्मचारी की अपने कार्य से की गयी अपेक्षाओं, कार्य द्वारा कर्मचारी को लौटाई गयी आर्थिक–अनार्थिक सुविधाओं और कर्मचारी के जीवन मूल्यों के बीच पायी जाती है। यह मैचिंग जितनी ही अच्छी होगी कार्य संतुष्टि उतना ही अधिक होगा। इसके विपरीत मैचिंग जितनी ही खराब होगी कार्य संतुष्टि उतना ही कम होगा। फिर भी यह देखा जाता है कि जो कर्मचारी मानसिक रूप से परिपक्व और संतुलित होते हैं, जो संपूर्ण रूप से विकसत होते हैं, जिन्हें सामाजिक आर्थिक

सुविधायें मिली होती हैं और जिनकी कार्य परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं, वे संतुष्ट होते हैं। मोंगा एवं अन्य (2015) ने अपने शोधकार्य से निष्कर्ष निकाला कि कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि के लिए उनका वेतन, सामाजिक स्वीकृति, प्रशासनिक सम्बंध, सीनियर्स का नजरिया एवं टीम में कार्य करने की क्षमता तुलनात्मक रूप से ट्रेनिंग एवं प्रोग्रेस, उपाधियों, कार्य की प्रकृति, कार्य स्थायित्व, नैतिकता एवं कार्यस्थल में कर्मचारी की भूमिका से अधिक महत्वपूर्ण हैं। शिक्षण व्यवसाय से संतुष्टि जहां व्यक्ति को सुखी जीवन प्रदान करता है, वहीं इससे समाज का भी हित होता है। शिक्षक योग्य नागरिकों का निर्माण तभी कर सकते हैं, जब वह निःस्वार्थ भाव से अपने अध्यापन से संतुष्ट होकर विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान करें। अध्यापक को शिक्षण कार्य से मिलने वाले संतोष पर ही भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की कामना की जा सकती है, अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि को अनेक तत्व प्रभावित करते हैं। जैसे–व्यवसाय के प्रति रूचि, विद्यालय का वातावरण, साथी कर्मचारियों का व्यवहार, कार्य से प्राप्त होने वाली आय, कार्य में उन्नति के अवसर आदि के अतिरिक्त आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक दशाऐं आदि। स्काल्विक एवं स्काल्विक (2017) ने शिक्षक की कार्य स्थिति एवं विद्यालय से सम्बंधित चरों का अध्ययन उनके आत्म प्रत्यय, दुश्चिन्ता, कार्य संतुष्टि एवं अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में उनके शिक्षण कार्य को छोड़ने के सम्बन्ध में किया तथा निष्कर्ष निकाला की शिक्षक का स्वास्थ्य आत्म प्रत्यय, दुश्चिन्ता, कार्य संतुष्टि चरों को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त इनका मॉडल यह भी बताता है की शिक्षकों की अपने कार्य से जो मांग है तथा कार्य करने से सम्बंधित जो भी संसाधन उपलब्ध है, वे शिक्षक के वैल बीइंग एवं अभिप्रेरणा को भी प्रभावित करता है।

ओकेल एवं मित्युदा (2017) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि संसाधनों की कमी, अत्यधिक कार्य का बोझ एवं अनुशासनहीनता शिक्षकों में दुश्चिन्ता के प्रमुख कारण है। इसके अतिरिक्त प्रबंधन का रवैया भी कार्य संतुष्टि को कम करता है। ये सभी कारण शिक्षक के कार्यक्षेत्र में नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने का कार्य करते हैं । शिक्षक जिस कार्य को कर रहा है, समाज में उस कार्य की कितनी सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान है, इस बात की भी कार्य संतुष्टि के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका है। 'राष्ट्रीय अध्यापक पाठ्यचर्या रुपरेखा (2010)' में इस बात पर बल दिया गया है कि "अध्यापको को सामाजिक बदलाव कि एक सक्रिय एजेंसी के तौर पर कार्य करना चाहिए।" २१वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र में विस्फोट होने के कारण शिक्षा में तीव्रगति से दिन–प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है, जिससे अध्यापको कि सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां उनका स्वयं का व्यक्तित्व एवं कार्य संतुष्टि प्रभावित हो रहे है।

समस्या का कथन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोध समस्या का शीर्षक है– प्राथमिक स्तर पर कार्यरत टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध कार्य का औचित्य

अध्यापको की कार्य संतुष्टि का मुद्दा शिक्षण प्रभावशीलता तथा विद्यालय के सुधार हेतु एक आवश्यक कारक है। अध्यापको के शैक्षिक प्रक्रिया में भाग लेने की इच्छा उनकी कार्य संतुष्टि पर निर्भर करता है। अध्यापको की कार्य संतुष्टि शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत जरुरी है, यदि अध्यापक कार्य से संतुष्ट है, तो वह विद्यालय के शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भागीदारी करता है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के अनुसार प्रत्येक बच्चे का प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार मौलिक अधिकार घोषित किया गया (आर0टी0ई0 अधिनियम, 2009)। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 27 में यह कहा गया है कि दस वर्षीय जनगणना के अतिरिक्त किसी अन्य गैर–शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए कोई शिक्षक नियुक्त नहीं किया जायेगा। (आर0टी0ई0 अधिनियम, 2009) अध्यापक कक्षा में छात्रों में कौशलो का विकास करके उनके ज्ञान को परिष्कृ त करता है, जिससे छात्रों की उपलब्धि बढ़ती है। शिक्षक शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है, वह शिक्षा जगत की धुरी है। कार्य संतुष्टि शिक्षक का महत्वपूर्ण भाग है, जिससे शिक्षक तथा छात्रों दोनो के प्रदर्शन में सुधार होता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए शोधकर्ता को प्राथमिक स्तर पर कार्यरत टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको के कार्य संतुष्टि के अध्ययन की आवश्यकता का अनुभव हुआ। अध्यापकों के कार्य संतुष्टि के सम्बन्ध में वर्तमान समय में अनेक शोध कार्य किये जा रहे हैं, परन्तु टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में क्या अन्तर है ? टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में क्या सम्बन्ध है ? अतः इस दृष्टिकोण से शोधकर्ता ने यह महसूस किया कि यह उसका उत्तरदायित्व बन जाता है, कि वह इस समस्या पर विचार करे। अतः यह शोध कार्य प्रासंगिक है।

प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा

प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर से तात्पर्य उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन संचालित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से है, जिनमें कक्षा एक से पाँच तक की शिक्षा दी जाती है।

टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापक

प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की नियुक्ति हेतु सी0बी0एस0ई0 द्वारा सी0टी0ई0टी0 का आयोजन किया जा रहा है वहीं राज्य स्तर पर माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद द्वारा यू0पी0 टी0ई0टी0 का आयोजन किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापक से तात्पर्य उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन सभी नियमित अध्यापकों से है, जो यू0पी0टी0ई0टी0 एवं सी0टी0ई0टी0 उत्तीर्ण हैं।

गैर–टी0ई0टी0 अध्यापक

गैर–टी0ई0टी0 अध्यापक से आशय उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन सभी नियमित अध्यापकों से है, जो यू0पी0टी0ई0टी0 एवं सी0टी0ई0टी0 उत्तीर्ण नही है।

कार्य संतुष्टि

कार्य संतुष्टि वह आनन्द दायक व सकारात्मक अभिवृत्ति है, जो व्यक्तियों द्वारा अपने कार्य के प्रति व्यक्त किया जाता है। यह अभिव्यक्ति कुछ विशेष कारणों जैसे– वेतन, कार्य की दशाएँ, प्रोन्नति के अवसर, समस्या का समाधान एवं लाभांश आदि से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्ययन में कार्य संतुष्टि से आशय शोध कार्य में प्रयुक्त कार्य संतुष्टि मापनी में प्राप्त आंकड़ो से होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला एवं गैर–टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

1. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।
2. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।
3. प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत अध्ययन में अनुसन्धान का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन देवरिया जनपद में संचालित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों तक समित होगा।
2. जनसंख्या के रूप में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी नियमित टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से अध्यापकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर किया जायेगा।

शोध विधि (शोध अभिकल्प)

प्रस्तुत शोधकार्य विवरणात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण प्रकार का है। इस प्रकार के अनुसंधान में घटित घटनाओं अथवा वर्तमान घटनाओं, परम्पराओं, अभिवृतियों, मानको आदि का सर्वेक्षण के आधार पर वर्तमान वस्तुस्थिति का अध्ययन तथा भविष्य की प्रत्याशाओं का आकलन किया जाता है।

जनसंख्या

देवरिया जनपद के समस्त परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी नियमित टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको को प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में अध्यापको का चयन हेतु सर्वप्रथम जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय, देवरिया से परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गयी। विद्यालयों का चयन लाटरी विधि के द्वारा किया गया। तत्पश्चात् 100 टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापको व 100 गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर किया गया।

प्रदत्त संग्रह

प्रस्तुत अध्ययन में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको की कार्य संतुष्टि से संबंधित प्रदत्त संग्रह के लिए डॉ मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस कार्य संतुष्टि मापनी में आठ आयामों को शामिल किया गया है :– (1) नौकरी का आंतरिक पहलू (2) वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें (3) भौतिक सुविधाएं (4) संस्थागत योजनाएं और नीतियां (5) अधिकारियों के साथ संतुष्टि (6) सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि (7) विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता (8) सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध । इस मापनी की विश्वसनीयता 0.87 है।

प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन मे संकलित आंकड़ों का विश्लेषण समुचित सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा किया गया, जिसमे मध्यमान, मानक विचलन एवं t टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रद्त्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं का निर्माण किया है। परिकल्पनाओं की गणना, विश्लेषण एवं व्याख्या न्यादर्श पर आधारित है, पर परिकल्पनाओं की स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने के लिए आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया है। अनुसंधान की योजना को क्रियान्वित करने के लिए शोधकर्ता ने सुसंगत स्रोतों से उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकड़ों को एकत्रित करने के पश्चात् उनको सुव्यवस्थित किया ताकि विश्लेषण के पश्चात् उनकी अर्थपूर्ण, स्पष्ट एवं सहज व्याख्या प्रस्तुत की जा सके।

तालिका संख्या 1.01

चर	आवृति	प्रतिशत
पुरूष	120	60.0
महिला	80	40.0
कुल	200	100.0
टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	50.0
गैर–टी0ई0टी0	100	50.0
कुल	200	100.0

ग्राफ संख्या 1.01

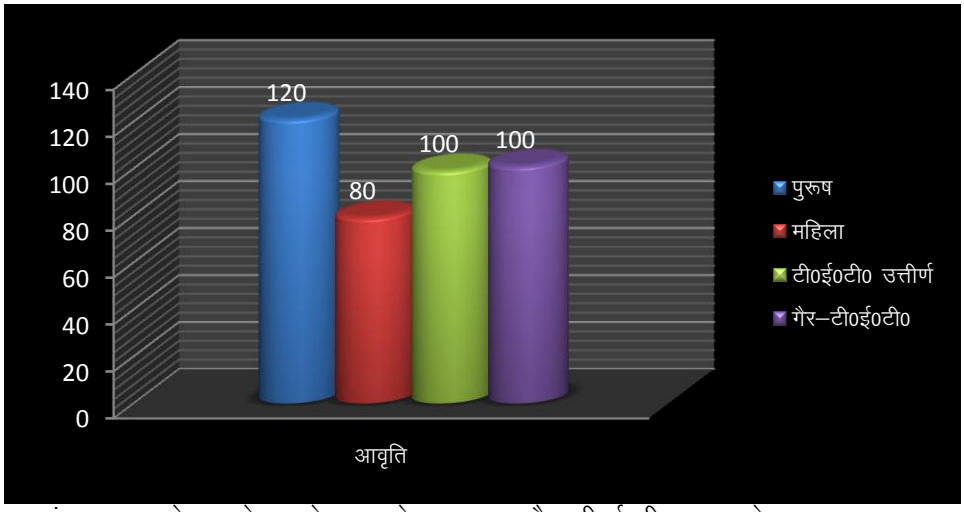

तालिका संख्या 1.01 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष एवं महिला अध्यापकों की संख्या क्रमशः 60.0%, एवं 40.0% है। टी0ई0टी0 के आधार पर 50.0% अध्यापक टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं 50.0% गैर–टी0ई0टी0 पाए गये।

तालिका संख्या–1.02 प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या 1.02

कार्य संतुष्टि	समूह	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता
नौकरी का आंतरिक पहलू,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	26.99	3.671	3.428	198	.001
	गैर–टी0ई0टी0	100	25.00	4.488			
वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	30.58	4.058	2.603	198	.010
	गैर–टी0ई0टी0	100	28.94	4.787			
भौतिक सुविधाएं,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	33.88	4.994	1.438	198	.152
	गैर–टी0ई0टी0	100	32.82	5.391			
संस्थागत योजनाएं और नीतियां,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	22.42	3.745	1.573	198	.117
	गैर–टी0ई0टी0	100	21.52	4.314			
अधिकारियों के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	23.33	4.192	2.118	198	.035
	गैर–टी0ई0टी0	100	22.07	4.248			
सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	19.52	3.751	2.656	198	.009
	गैर–टी0ई0टी0	100	18.02	4.193			
विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	24.02	4.445	1.319	198	.189
	गैर–टी0ई0टी0	100	23.19	4.474			
सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	19.67	3.210	2.417	198	.017
	गैर–टी0ई0टी0	100	18.44	3.948			
कार्य संतुष्टि	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण	100	190.27	20.952	2.675	198	.008
	गैर–टी0ई0टी0	100	181.50	25.157			

तालिका संख्या–1.02 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से सम्बंधित प्रथम आयाम (नौकरी का आंतरिक पहलू) को लेकर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 3.428, p =.001 है। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 26.99, SD = 3.671) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों

के मध्यमान (M = 25.00, SD = 4.488) से अधिक पाया गया। कार्य संतुष्टि से सम्बन्धित द्वितीय आयाम (वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें) के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 2.603, p = .010 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 30.58, SD = 4.058) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमान (M = 28.94, SD = 4.787) से अधिक पाया गया। भौतिक सुविधाएं t (198) = 1.438, p =.152 तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां t (198) = 1.573, p =.117 के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। अधिकारियों के साथ संतुष्टि, के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 2.118, p =.035 पाया गया । दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 23.33, SD = 4.192) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों (M = 22.07, SD = 4.248) से अधिक पाया गया। सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि, के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 2.656, p =.009 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 19.52, SD = 3.751) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों (M = 18.02, SD = 4.193) से अधिक पाया गया। विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता t (198) = 1.319, p =.189 के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। आयाम H (सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध) के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 2.417, p =.017 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 19.67, SD = 3.210) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों (M = 18.44, SD = 3.948) से अधिक पाया गया। कार्य संतुष्टि के सभी आयामों को मिलाकर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (198) = 2.675, p =.008 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान (M = 190.27, SD = 20.952) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों (M = 181.50, SD = 25.157) से अधिक पाया गया।

उपयुक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है की पूर्व में बनायी गयी शून्य परिकल्पना प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है, नौकरी का आंतरिक पहलू, वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें, अधिकारियों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि एवं सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या–1.03 प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या 1.03

कार्य संतुष्टि	समूह	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता
नौकरी का आंतरिक पहलू,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	27.07	3.826	2.446	119	.016
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	25.19	4.483			
वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	30.70	4.428	1.788	119	.076
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	29.24	4.523			
भौतिक सुविधाएं,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	34.09	4.716	.876	119	.383
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	33.28	5.302			
संस्थागत योजनाएं और नीतियां,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	22.46	3.795	1.318	119	.190
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	21.49	4.205			
अधिकारियों के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	23.93	3.909	2.431	119	.017
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	22.09	4.302			
सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	19.26	3.968	1.178	119	.241
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	18.39	4.105			
विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	23.72	4.402	.398	119	.691
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	23.39	4.742			
सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	19.30	3.554	1.078	119	.283
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	18.57	3.811			

कार्य संतुष्टि	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष	54	189.57	20.482	1.554	119	.123
	गैर–टी0ई0टी0 पुरूष	66	183.06	24.697			

तालिका संख्या 1.03 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से सम्बंधित प्रथम आयाम (नौकरी का आंतरिक पहलू) को लेकर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर t (119) = 2.446, p =.016 है। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों का मध्यमान (M = 27.07, SD = 3.826) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमान (M = 25.19, SD = 4.483) से अधिक पाया गया। कार्य संतुष्टि से सम्बन्धित द्वितीय आयाम (वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें) के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सीमान्त सार्थक अंतर t (119) = 1.788, p =.076 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों का मध्यमान (M = 30.70, SD = 4.428) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमान (M = 29.24, SD = 4.523) से अधिक पाया गया। भौतिक सुविधाएं t (119) = .876, p =.383 तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां t (119) = 1.318, p =.190 के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। अधिकारियों के साथ संतुष्टि, के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (119)= 2.431, p =.017 पाया गया । दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों का मध्यमान (M =23.93, SD =3.909) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों (M = 22.09, SD = 4.302) से अधिक पाया गया । सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि, t (119) = 1.178, p =.241 विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता, t (119) = .398, p =.691 सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध t (119) = 1.078, p =.283 के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। कार्य संतुष्टि के सभी आयामों को मिलाकर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (119) = 1.554, p =.123 नही पाया गया।

उपयुक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है की पूर्व में बनायी गयी शून्य परिकल्पना प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है, नौकरी का आंतरिक पहलू, अधिकारियों के साथ संतुष्टि, के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या 1.04 प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला एवं गैर–टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या 1.04

कार्य संतुष्टि	समूह	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	स्वतंत्रता का अंश	सार्थकता
नौकरी का आंतरिक पहलू,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	26.89	3.518	2.506	77	.014
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	24.62	4.539			
वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	30.42	3.609	2.065	77	.042
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	28.35	5.291			
भौतिक सुविधाएं,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	33.62	5.353	1.387	77	.170
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	31.91	5.529			
संस्थागत योजनाएं और नीतियां,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	22.38	3.725	.844	77	.401
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	21.59	4.587			
अधिकारियों के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	22.62	4.448	.600	77	.550
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	22.03	4.203			
सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	19.82	3.492	2.872	77	.005
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	17.29	4.331			
विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता,	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	24.38	4.519	1.630	77	.107
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	22.79	3.930			
सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	20.11	2.715	2.461	77	.016
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	18.18	4.253			

कार्य संतुष्टि	टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला	46	191.11	21.705	2.352	77	.021
	गैर–टी0ई0टी0 महिला	34	178.44	26.141			

तालिका संख्या 1.04 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से सम्बंधित प्रथम आयाम (नौकरी का आंतरिक पहलू) को लेकर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर t (77) = 2.506, p =.014 है। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान (M = 26.89, SD = 3.518) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान (M = 24.62, SD = 4.539) से अधिक पाया गया। कार्य संतुष्टि से सम्बंधित द्वितीय आयाम (वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें) के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सीमान्त सार्थक अंतर t (77) = 2.065, p =.042 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान (M = 30.42, SD = 3.609) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान (M = 28.35, SD = 5.291) से अधिक पाया गया। भौतिक सुविधाएं t (77) = 1.387, p =.170 तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां t (77) = .844, p =.401 अधिकारियों के साथ संतुष्टि t (77) = .600, p =.550 के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि, t (77) = 2.872, p =.005 के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान (M = 19.82, SD = 3.492) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान (M = 17.29, SD = 4.331) से अधिक पाया गया। विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता, t (77) = 1.630, p =.107 टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध t (77) = 2.461, p =.016 के सम्बन्ध में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान (M = 20.11, SD = 2.715) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान (M = 18.18, SD = 4.253) से अधिक पाया गया। कार्य संतुष्टि के सभी आयामों को मिलाकर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर t (77) = 2.352, p =.021 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान (M = 191.11, SD = 21.705) सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान (M = 178.44, SD = 26.141) से अधिक पाया गया।

उपयुक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है की पूर्व में बनायी गयी शून्य परिकल्पना प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों कि कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है, नौकरी का आंतरिक पहलू, वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें, सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि, सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

इस शोध कार्य के फलस्वरूप कई उपयोगी परिणाम तथा निष्कर्ष प्राप्त प्राप्त हुए है। प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षो से यह ज्ञात हुआ है कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण और गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। जबकि भौतिक सुविधाएं तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां एवं विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। कार्य संतुष्टि के सभी आयामों को मिलाकर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों का मध्यमान सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों से अधिक पाया गया। कारण स्पष्ट है कि कार्य करने का समय, कैरियर में प्रगति की संभावनाएं, सामाजिक वातावरण एवं कार्य स्थायित्व कर्मचारियों की कार्य संतुष्टि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है (सिंह एवं पंकन 2011)। साथ ही कार्य करने के क्षेत्र में व्यक्ति की व्यक्तिगत, भावात्मक, उनका कार्य के प्रति नजरिया, उनके कार्य करने की गति एवं क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है (प्लेटिस एवं अन्य 2015)। अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का स्तर गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की तुलना में बेहतर है।

प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से सम्बंधित नौकरी का आंतरिक पहलू, वेतन, पदोन्नति और सेवा शर्तें और अधिकारियों के साथ संतुष्टि, के सन्दर्भ में दोनों समूहों के मध्यमानो की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरूष अध्यापकों का मध्यमान सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों से अधिक पाया गया। अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का स्तर उक्त आयामो के सन्दर्भ मे गैर–टी0ई0टी0 अध्यापकों की तुलना में बेहतर है। भौतिक सुविधाएं तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां, सामाजिक स्थिति एवं परिवार के साथ संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता तथा सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 पुरूष अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया।

प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं

गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि से सम्बंधित भौतिक सुविधाएं तथा संस्थागत योजनाएं और नीतियां, अधिकारियों के साथ संतुष्टि तथा विद्यार्थियों के साथ घनिष्टता के सन्दर्भ में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर नही पाया गया। कार्य संतुष्टि के सभी आयामों की तुलना करने पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों का मध्यमान सार्थक रूप से गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों के मध्यमान से अधिक पाया गया। अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का स्तर गैर–टी0ई0टी0 महिला अध्यापकों की तुलना में बेहतर है।

शोध कार्य का शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत शोध प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको कि कार्य संतुष्टि पर आधारित है। इस शोध कार्य के परिणाम इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिकांश परिस्थितियों में टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापको की कार्य संतुष्टि गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको की तुलना में बेहतर है। इसका मुख्य कारण यह प्रतीत होता है, कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण अध्यापक शिक्षा के नवाचारिक अनुप्रयोगों से अवगत है तथा प्रभावी सम्प्रेषण एवं कौशलों (जो गुणवत्ता के संकेतक है) से परिपूर्ण हैं, साथ ही वे अध्यापक पात्रता परीक्षा की योग्यता भी रखते है और शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है। जबकि गैर–टी0ई0टी0 अध्यापको में शिक्षा में हो रहे नवाचारों के प्रति जागरूकता का अभाव है। अतः सेवाकालीन प्रशिक्षण के माध्यम से उनके प्रशिक्षण में शिक्षण अभिवृति, शैक्षिक नवाचारों तथा शिक्षण व्यवसाय में पूर्ण संतुष्टि को मुख्य रूप से सीखाया जाय, ताकि वह पूर्ण निष्ठा से बालको के अन्दर ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि कर सके। इसके अलावा प्राथमिक विद्यालय के अध्यापको के लिए सभी प्रकार की मिलने वाली सुविधाओं मे वृद्धि की जाय जिससे उनकी कार्य संतुष्टि का स्तर बेहतर होगा। इसके फलस्वरूप अध्यापक सामाजिक बदलाव की सक्रिय एजेंसी के रूप मे अपनी भूमिका का निर्वहन करेगें, साथ ही शिक्षायी गुणवत्ता बढ़ाने मे वे अपना–अपना सकारात्मक सहयोग दे सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बुच, एम0बी0 (1988–94), फिफ्थ सर्वे ऑफ रिचर्स इन एजुकेशनएन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।

बेस्ट, जे0डब्ल्यू व कान्ह, जे0बी0 (2011). रिसर्च इन एजुकेशन (दसवाँ संस्करण), नई दिल्ली : पी0एच0आई0 लर्निंग प्रा0लि0।

गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अल्का (2010) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

करलिंगर, फ्रेड0एन0 (से0एडि0–1983) फाउण्डेशन आफ विहैवियरल रिसर्च सुरजीत पब्लिकेशन, नन्दानगर, न्यू देलही।

कौल, लोकेश (2008) :शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, प्रा0लि0, नोएडा।

कौशिक, एम०. (2013. जून 13) टीचर ट्रेनिंग, ए हायर स्टैंडर्ड, विजनैस टूडे।

सिंह, अरूण कुमार (2009): उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, पटना।

शिक्षा आयोग, 1964–66. एजुकेशन एण्ड नेशनल डवलपमेंट, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

यूनेस्को,(2005), टीचर एंड एजूकेशनल क्वालिटी, मोनिटरिंग गलोबल नीड्स फार 2015।

Monga, A., Verma, N., & Monga, O. P. (2015). A Study of Job Satisfaction of Employees of ICICI Bank in Himachal Pradesh. Human Resource Management Research, 5(1), 18-25.

Okeke, C. I., & Mtyuda, P. N. (2017). Teacher Job Dissatisfaction: Implications for Teacher Sustainability and Social Transformation. Journal of Teacher Education for Sustainability, 19 (1), 54-68.

Platis, C., Reklitis, P., & Zimeras, S. (2015). Relation between job satisfaction and job performance in healthcare services. Procedia-Socisl and Behavioural Sciences, 175, 480-487.

Skaalvik E.M., Skaalvik S. (2017). Still motivated to teach? A study of school context variables, stress and job satisfaction among teachers in senior high school, social psychology of education 20 (1), 15-37.

Vinod Kumar Singh and Kishor Pankan(2011),"Employees perception of job satisfaction in Indian and foreign banks", International Journal of Management and Technology,

Vol.2, No.2,pp.33-38.

Websites

http://mhrd.gov.in/sites/upload files/mhrd/files/Edu.paf/ Retrieved on 12.06.2019

http://www.Inflibnet.com/ retrieved on 17.05.2019

www.india.gov.in retrieved on 11.09.2018

Htt/://www.indg.in/in india retrieved on 17.07.2018

सर्वशिक्षा अभियान indiadevelopment Gateway